भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध : सन् 2014 से वर्तमान तक

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

के अन्तर्गत राजनीति शास्त्र में पी0 एच0 डी0 की उपाधि

हेतु प्रस्तवित रूपरेखा

2018–2019

पर्यवेक्षक

डॉ0 अंजू. (असिस्टेन्ट प्रोफेसर)

समाज शास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग

समाज विज्ञान संकाय

शोधार्थिनी

रूबी

शोध छात्रा

विभागाध्यक्षा

प्रो0 पूर्णिमा जैन

समाज शास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग

संकाय प्रमुख

प्रो0 कमलजीत संधु

समाज विज्ञान संकाय

समाज विज्ञान संकाय

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा

''भारत–पाकिस्तान सम्बन्धः सन् 2014 से वर्तमान तक''

प्रस्तावनाः–भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध न केवल भारतीय उपमहाद्वीप में बल्कि यह समूचे अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में एक ज्वलन्त तथा संवेदनशील विषय है। स्वतन्त्रता प्रप्ति से वर्तमान तक इनके सम्बन्ध स्पर्धा, संघर्ष एवं युद्ध के दायरे से बाहर नही निकले है। जबकि दोनों ही राष्ट्र् एक ही सांझी संस्कृति , सभ्यता और विरासत के अंग रहे है। पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा एवं मोहन जोदडों भारतीय इतिहास के वैसे ही महत्वपूर्ण स्थल हैं जैसे–दिल्ली, आगरा , अजमेर एवं लखनऊ पाकिस्तान के इतिहास के महत्वपूर्ण स्थल है। उर्द्दू , पजाबी, सिंधी और हिन्दी चार ऐसी भाषाएं हैं, जो भारत और पाकिस्तान दोनों देशो में बोंली जाती है। दोनों राष्ट्रों के बड़े भू–भाग में एक ही प्रकार के कपड़े पहने जाते हैं तथा भोजन की आदतें, तौर–तरीके , प्रधायें , मूल्य एवं मनोरंजन भी समान है। भारत विभाजन के फलस्वरूप पाकिस्तान का जन्म 1947 में हुआ। पाकिस्तान का जन्म भारत के प्रति घृणा तथा अविश्वास के कारण हुआ था। पाकिस्तान भारत का निकटतम पड़ोसी देश है, जिसके कारण प्रारम्भिक काल से ही पाकिस्तान के साथ भारत बेहतर सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है। स्वाधीनता के उपरान्त ही भारतीय प्रधानमन्त्री नेहरू जी ने पाकिस्तान के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा की थी, परन्तु भारत–पाकिस्तान के सम्बन्धो में सकारात्मक सुधार सम्भव नही हो सका। सन् 1965 व 1971 में पाकिंस्तान ने भारत पर आक्रमण कर शत्रुभाव का परिचय दिया यद्यपि इन दोनों ही युद्धो में भारतीय सेना ने पाकिस्तान को पराजित कर दिया । 1971 कें युद्ध के उपरान्त ,भारत की तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती गाँधी और पाकिस्तान की प्रधानमन्त्री भुट्टो के मध्य 1972 में ''शिमला समझौता'' हुआ। इस समझौते का उद्देश्य दोनों देशो के मध्य उत्पन्न विवादों का शान्तिपूर्वक निपटारा करना था। अपनी शान्तिप्रियता की नीति का त्याग न करते हुए भारतीय प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने पाकिस्तान के साथ मित्रता का हाथ बढ़ाने औ्र सम्बंन्धो को सहज बनाने का प्रयास किया परन्तु पाकिस्तान ने इस मित्रता का जवाब भारत को कारगिल के संघर्ष(1999) के रूप में दिया। इस अघोषित युद्ध में भी पाकिस्तान को हार का सामना करना पड़ा। जून 2003 में दानों देशों के मध्य पुनःकूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित हुये तथा वर्ष 2004 में मित्रता की पहल भी की गयी , परन्तु यह मैत्रीभाव अधिक समय

तक न चल सका क्योकि 26 नवम्बर 2008 को मुम्बई के होटल ताज पर पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा हमला किया गया। इसी प्रकार वर्ष 2013 में कश्मीर विवाद को लेकर भारत तथा पाकिस्तान के मध्य गम्भीर सैन्य झड़पे हुई। सन् 2014 में भारतीय प्रधानमन्त्री मोदी जी के शपथ ग्रहण समारोह में पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री नवाज शरीफ को भी आमन्त्रित किया गया। जो मोदी जी द्वारा पाकिस्तान के प्रति मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाने की एक सकारात्मक पहल थी परन्तु पाकिस्तान द्वारा 2016 में ''उरी सैक्टर''में हुए हमले से भारत की इस पहल को आघात पहुँचा। इसी प्रकार 14 फरवरी 2019 को पाकिस्तान द्वारा पुलवामा में हुये हमलों से भारत पाक सम्बन्धो के मध्य पुनः तनावपूर्ण स्थिति पैदा हो गयी है। इन विरोधाभासी सम्बन्धों के अतिरिक्त दोनों देशों के मध्य कई ऐसे कारक हैं, जो भारत–पाक सम्बनधों को प्रभावित करते हैं जैसे– पाकिस्तान द्वारा रूस से विस्तृत प्रकार से रक्षा सहयोग एवं सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया जाना। यद्यपि ऐसा पाकिस्तान भारत की रूस के प्रति परिवर्तित नीति के कारणवश कर रहा है, क्योंकि भारत का वर्तमान में रूस के बजाय अमेरिका के प्रति दृष्टिकोण मृदुल होता जा रहा है। इसके अतिरिक्त चीन की विस्तारवादी नीतियों का पाकिस्तान द्वारा समर्थन किया जा रहा है। जो भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये महत्वपूर्ण चुनौती है अतः उक्त कारकों ने भारत–पाक सम्बन्धों को प्रभावित किया है।

सैद्धान्तिक रूपरेखा

भारतीय विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य **राष्ट्रीय सुरक्षा , परस्पर सहयोग, शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व और विश्व बंधुत्व की भावना** को स्थापित करना है। भारत की आन्तरिक और बाह्य नीतियों के आदर्शों और उद्देश्यों को भारत के संविधान के भाग 4 के अनुच्छेद 51 में उल्लेखित किया गया है। जिसके अनुसार "भारत अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा को बढ़ावा देने हेतु तत्पर रहेगा"। विदेश नीति को परिभाषित करने का सर्वप्रथम कार्य जॉर्ज मॉडलस्की द्वारा किया गया उन्होने अपनी प्रसिद्व पुस्तक **(A Theory of foreign policy, 1962:6 -7**) में विदेश नीति को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''विदेश नीति समुदायों द्वारा विकसित उन गतिविधियों की व्यवस्था है जिसके द्वारा एक देश अन्य देश को ढालने तथा अपने व्यवहार को अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण के अनुसार ढालने का प्रयास करता है। जंयन्त

बंधोपाध्याय **(The making of India s Foreign Policy, 1980)** के अनुसार '' विदेश नीति का निर्धारण मूलरूप से किसी राष्ट्रीय राज्य द्वारा अपने साध्य और साधन का चयन करने की व्यवस्था है।'' भारत की विदेशी नीति सदैव ही अन्तराष्ट्रीय शान्ति और राष्ट्रीय सुरक्षा को बढ़ावा देने की रही है। वही गुटानिरपेक्षता की नीति का उद्देश्य एक स्वतन्त्र विदेश नीति का निर्वाह करना तथा संघर्ष की सम्भावनाओं को कम करके अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति स्थापित करना है। पंचशील सिद्धान्त के पाँच सिद्धान्तों से अभिप्राय है, आचरण के पाँच सिद्धान्त जिनका मुख्य उद्देश्य है– एक–दूसरे की भूक्षेत्रीय अखण्डता तथा प्रभुसत्ता का पारस्परिक सम्मान, आक्रमण न करना, एक–दूसरे के आन्तरिक मामलें में हस्तक्षेप न करना, परस्पर लाभ तथा शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व । यह सभी सिद्धान्त भारत की विदेश नीति के आदर्शवादी स्वरूप को व्यक्त करते है । यथार्थवादी विद्वानों में हैन्स जे मोर्गेन्थाऊ प्रमुख विचारक है जिन्होंने अपनी पुस्तक **"Politics Among Notions" (1948)** में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को शक्ति के रूप परिभाषित राष्ट्र हित की अवधारणा कहा है। ''मैकियावली ने अपनी प्रसिद्ध ग्रन्थ **"The prince," (1532)** में कहा है कि ''राज्य के नेता का अंतिम कौशल है कि वह विश्व राजनीति में बदलते सत्ता विन्यास को स्वीकार करे और उसके अनुकूल बने। जिससे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में शक्ति सन्तुलन स्थापित होगा''। (Machiavelli :2-5) परम्परागत यथार्थवादी विचारक थ्यूसिडाइड्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **"The Peloponnesian war (C.430-406 BC)"** में ''अन्तर्राष्ट्रीय शाक्ति के संचालन तथा वर्चस्व की इच्छा को मानव स्वभाव के मौलिक तत्वों (जैसे, प्रसिस्पर्द्धा, भय तथा युद्ध आदि) के रूप में व्यक्त किया है।रूसों ने अपनी रचना **"The state of war" (C. 1750)** के अन्तर्गत कहा है '' कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में मानव स्वभाव नहीं अपितु अराजक प्रणालियाँ ही भय, ईर्ष्या, संदेह और असुरक्षा को बढ़ावा देती है''। (Dunne, 2008) नवयथार्थवादी विचारक इ.एच. कार. ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **"The twenty years crisis" (1939)** में लिखा है कि प्राकृतिक सामंजस्य विश्व शान्ति को बढ़ावा देता है। जॉन मेयर शिमर ने अपनी पुस्तक **"The tragedy of great power politics" (2001)** में स्पष्ट रूप से ''राष्ट्र की सुरक्षा हेतु आक्रामक यथार्थवाद अर्थात् सापेक्ष शक्ति को ग्रहण करने का सुझाव दिया है। उदाहरण के लिए पाकिस्तान अपनी सापेक्ष शक्ति को बढ़ाने हेतु चीन व रूस से परमाणु शस्त्रों का आयात कर रहा है''। (Mearhneimer,2001:14) सुरक्षात्मक नव यथार्थवादी विचारक कनैथ वाल्ट्ज ने

अपनी पुस्तक **"Theory of international politics" (1979)** में वर्णन किया है कि ''अन्तर्राष्ट्रीय संरचना अराजकतापूर्ण क्रमवार सिद्धान्तों जैसे– क्षमता के वितरण, अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में महाशक्तियों की संख्या पर निर्भर करती है''। (LiLi,2009: 1-3) उदारवादी विद्वान ईमैन्युअल कांट केअनुसार ''गणतन्त्रात्मक संविधानवाद के द्वारा व्यक्तिगत चेतना में बदलव होगा जिसके उपरान्त चिरस्थायी शान्ति को प्राप्त किया जा सकता है। राज्यों के मध्य संघीय समझौते के द्वारा युद्ध का अन्त किया जा सकता है''। (LiLi,2009: 5-6) जैरमी बैंथम ने तर्क दिया है कि ''स्थायी शान्ति के लिए आवश्यक है कि राज्यों के लिए वैधानिक (कानूनी) अधिकारों तथा कर्तव्यों की व्यवस्था हो।'' फुकुयामा ने अपनी पुस्तक **"The End of History and the last man"(1992)** में कहा है कि–''आन्तरिक राजनीतिक व्यवस्थाओं का विस्तार अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष का विनाश कर देगा''। (Dunne, 2008:110-119) भारतीय प्राचीन राजनीतिज्ञ कौटिल्य द्वारा रचित पुस्तक **''अर्थशास्त्र'' (C.350-283 BCE)** में मण्डल सिद्धान्त का उल्लेख किया गया है जो अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को स्पष्ट करता है। मण्डल सिद्धान्त में राज्यों द्वारा एक–दूसरे के प्रति व्यवहार में लायी जाने वाली नीति का वर्णन किया गया है। कौटिल्य के अनुसार ''राष्ट्रों की भौगोलिक स्थिति के आधार पर पारस्परिक सम्बन्धों का निर्माण किया जाता है''। मण्डल सिद्धान्त वर्तमान समय में भारत–पाकिस्तान के सम्बन्धों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है क्योंकि भारत की सीमाएँ पाकिस्तान और चीन से लगी हुई है और कुछ सीमा तक इसी कारण इन राज्यों के साथ भारत के मतभेद बने हुए है तथा भारत के प्रति मतभेदों की इस समानता के कारण पाकिस्तान और चीन परस्पर मित्र हैं। (singh &Roy, 2011: 11-15) ''हम अपने साथ अपने मित्रों को बदल सकते है, परन्तु अपने पड़ोसियों को नहीं बदल सकते है''। (Bajpai and Mallavarapu, 2005:1.16) भारत की विदेश नीति का अत्यधिक कठिन भाग भारत के पाकिस्तान के साथ सम्बन्धों का संचालन रहा है। इस सम्बन्ध में के०आर० पिल्लई का कहना है कि– ''निश्चय ही भारत के पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध भारत की विदेश नीति का अधिक देखने योग्य मुख्य भाग रहा है।''

भारत की विदेश नीति के महत्वपूर्ण सिद्धान्त के रूप में, गुटनिरपेक्षता, पंचशील, उपनिवेशवाद का विरोध, संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन तथा तीसरे विश्व के साथ एकता, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समाप्ति,

ऊर्जा सुरक्षा तथा इसके लिए नागरिक परमाणु ऊर्जा सहयोग स्थापित करने की नीति को प्राथमिकता दी गयी है। उक्त सभी सिद्धान्तों ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भारत को उनके उद्‌दश्यों की प्राप्ति में सहायता प्रदान की है। उक्त सभी सिद्धान्त नेहरू जी के शासन काल से यू०पी०ए० के शासन काल तक (1947–2014 तक) परम्परागत सिद्धान्तों के रूप में कार्य करते रहे, परन्तु मोदी जी के शासन काल में (2014 से वर्तमान तक) भारत की विदेश नीति के सिद्धान्तों में अर्थात् भारत की विदेश नीति में परिवर्तन आया है। मोदी जी ने अपने पड़ोसी देशों के साथ सामरिक सम्बन्ध प्रगाढ किए हैं परन्तु वर्तमान में भारत के निकटतम पड़ोसी देश पाकिस्तान के साथ उरी सैक्टर हमला तथा पुलवामा जैसे हमलों से भारत–पाक सम्बन्धों में गहरी दरार दिखाई पड़ती है,जो भारत–पाक सम्बन्धों में युद्ध जैसी स्थिति को उत्पन्न कर रही है।

साहित्य पुनर्विलोकन

(Tavers, 2008) प्रस्तुत लेख में लेखक द्वारा कश्मीर संघर्ष को सम्बोधित करने के लिए एक संघर्ष समाधान रूपरेखा को प्रस्तुत किया गया है। सर्वप्रथम लेखक कश्मीर विवाद को बहुआयमी विवाद के रूप में देखता है जिसमें वह कहते है कि भारत और पाकिस्तान के बीच अंतर्राज्यीय विवाद के अलावा, कश्मीर भी सशस्त्र संघर्ष है जो आतंकवादियों के अधिकार जिसमें जिहाद शामिल है के लिए तैयार हैं। द्वितीय पक्ष में कश्मीर की जटिलता से सभी को अवगत कराने हेतु सम्प्रभुत्ता के छः स्तरों पर आधारित मूल रूप रेखा प्रस्तुत की गयी है जिससे भारत, पाकिस्तान तथा कश्मीर के मध्य समझौते की प्रक्रिया के निहितार्थों को रेखांकित करने में सहायता प्रदान होगी। इसी के आधार पर लेखक स्पष्ट करते हैं कि शान्ति के लिए एक दिशा निर्देश प्रस्तावित हो जिसमें वे तीन क्रमिक चरणों को शामिल करते हैं : विश्वास निमार्ण के उपाय, जम्मू–कश्मीर की असीमित मूल स्थिति की बहाली और तीसरा भारत तथा पाकिस्तान के मध्य सम्पूर्ण स्तर पर या आंशिक स्तर पर सहभागी सम्प्रभुत्ता के अवसर होना।

(Salik,2010) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने दक्षिण एशियाई क्षेत्र के परमाणु हथियारों के इतिहास को पाकिस्तान के दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न किया है। अब तक के परमाणु हथियारों के इतिहास

के दृष्टिकोण में पाकिस्तान के हितों की रक्षा के लिए काम किया है। भारत द्वारा किए गए 11 मई 1998 के परमाणु परिक्षण के बाद पाकिस्तान द्वारा स्वयं को परमाणु उपकरण के परिक्षण के लिए प्रेरित किया है। हालांकि परमाणु हथियार तथा परमाणु पाकिस्तान को हमेशा पसंद थे ताकि भारत की तरह पाकिस्तान परमाणुओं के पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा का सामना कर सके इस हेतु परमाणु हथियार तथा परमाणु हमेशा से ही पाकिस्तान की रक्षात्मक प्रतिक्रिया का एक हिस्सा रहे है। लेखक ने प्रतिपक्षीय अध्ययन किया है, जिसमें उन्होंने भारत के 1998 के परमाणु परिक्षण के रणनीतिक लाभों और लागत पर ध्यान केद्रित किया है। वही यह भी तर्क दिया है कि भारत के लिए यह उचित होता कि वह अपनी परमाणु क्षमताओं के बारे में अस्पष्टता बनाए रखता जैसा की पाकिस्तान के रणनीतिक समुदाय की ओर से विश्लेषण किया है। अतं में लेखक स्पष्ट कहता है कि पाकिस्तान के परमाणु सिद्धान्त की प्रकृति अधिक व्यापक है क्योंकि भारत के परमाणु निर्णय में सेना की न्यूनतम भागीदारी की तुलना में पाकिस्तान की सेना देश के परमाणु मामलें से प्रभावित होती है।

(Panigrani,2010) उपर्युक्त पुस्तक में लेखक ने जम्मू कश्मीर से सम्बन्धित समस्या के विषय पर ऐतिहासिक परिपेक्ष्य को प्रस्तुत किया है। लेखक कहता है कि कश्मीर में संघर्ष के इतिहास और भू–आकृतिक संदर्भ को जानने से पहले यह आवश्यक है कि यह जाना जाये कि कैसे भारत जैसे नवजात राज्य को ढ़हते साम्राज्य की राजनीति में खींच लिया गया जिसके उपरान्त मध्य–पूर्व देशों ने अपने हितों को आगे बढ़ाने तथा इस क्षेत्र में अपने पैर जमाने के लिए कश्मीर मुद्दे का लाभ उठाया। लेखक द्वारा प्रतिनिधि अनुसंधान के माध्यम से विभिन्न कारणों को प्रकाश में लाया गया है जो एक राष्ट्र राज्य के रूप में भारत की भागीदारी से प्रभावित हुए और औपनिवेशिक राष्ट्रों के साथ अपने सम्बन्धों को खत्म कर दिया,परन्तु पाकिस्तान मध्य–पूर्व में अपने प्रभाव को बनाए रखने के लिए अमेरिका का सहयोगी बन गया। वहीं भारत का हिस्सा बनने के लिए तथा पश्चिमी प्रायोजित गठबंधन का हिस्सा बनने के लिए पाकिस्तान की उत्सुकता ने उपमहाद्वीप में शीत की राजनीति को जन्म दिया। लेखक स्पष्ट करते है कि कश्मीर विवाद को इस राजनीति के द्वारा उलझा दिया गया और तब से यह कश्मीर विवाद उपमहाद्वीप की एक बडी समस्या बन गया है।

(Bonney, Maini&Malik, 2011) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या भारत तथा पाकिस्तान के मध्य स्थायी शान्ति सम्भव है और कश्मीर मुद्दे सहित दोनों राष्ट्रों के मध्य अन्य विवादों के समाधान के परिपेक्ष्य क्या है। यह पुस्तक एक मनोरंजक पुस्तक है जो दोनों राष्ट्रों के पूर्व सैन्य अधिकारियों के साथ साक्षात्कार के माध्यम से भारत तथा पाकिस्तान के मध्य सम्बन्धो के विचारो, अर्न्तदृष्टि तथा विश्लेषण प्रदान करती है। लेखक के अनुसार भारतीयों का मानना है कि भारत के खिलाफ छद्म युद्ध के कारण पाकिस्तान पर विश्वास नहीं किया जा सकता है इसके साथ ही पाकिस्तान की सेना का इस्लामवादियों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध विकसित होने से भारत को खतरा है। भारतीय कब्जे वाला कश्मीर भारत का अभिन्न अगं है और कारगिल जैसी नियन्त्रण रेखा के पार किसी भी तरह के बदलाव का सामना किया जाना चाहिए वहीं दूसरी ओर पाकिस्तानी कश्मीर मुदे पर जोर देते है।

(wolpert, 2011) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने 1947 में उपमहाद्वीप के विभाजन के साथ शुरूआत करके विश्व के सबसे पुराने राजनीतिक संकटों को दर्शाया है। पुस्तक द्वारा कश्मीर में उग्रवाद,हिंसा,और कश्मीर में लोकतन्त्रिक स्थितियों के क्षरण का उत्कृष्ट विवरण दिया गया है। वह 2008 के मुम्बई में आतंकवादी हमलों को भारत के खिलाफ पाकिस्तान के छद्म युद्ध के उदाहरण के रूप में देखते है। प्रस्तुत पुस्तक में भारत और पाकिस्तान के द्विपक्षीय सम्बन्धों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। परमाणु आयाम के सम्बन्ध में तर्क देते है कि दोनों देशो के पास परमाणु हथियार होने से कश्मीर भविष्य में पृथ्वी पर सबसे खतरनाक बन सकता है। लेखक स्पष्ट तर्क देते है कि किसी भी स्थायी समाधान हेतु भारत और पाकिस्तान के मध्य दशकों पुराने गहरे अविश्वास के मुद्दे को सुलझाने की कोशिश करनी चाहिए , जिसके अभाव में कश्मीर विवाद के समाधान की दिशा में सभी कदम असम्भव सिद्ध होगे।

(Ganguly and Kapur, 2011) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक द्वारा भारत तथा पाकिस्तान द्वारा परमाणु क्षमता के प्रसार की राजनीति को दर्शाने का प्रयास किया है। उनका मानना है कि भारत,पाकिस्तान और दक्षिण एशिया में परमाणु स्थिरता पर आशावादी और निराशावादियों के मध्य एक

रणनीतिक वाद–विवाद है कि क्या दक्षिण एशिया के परमाणुकरण ने उपमहाद्वीप को स्थिर कर दिया है या परमाणु प्रसार ने इसको अधिक खतरनाक बना दिया है। लेखक ने पुस्तक में यह बताया है कि प्रारम्भ से ही दक्षिण एशिया का नाभिकीयकरण अत्यधिक रूचि का विषय रहा है और इस मुद्दे पर बडे स्तर पर वाद–विवाद हुआ है। राष्ट्रीय अस्तित्व के लिए तर्कसंगत और परमाणु हथियारों की विनाशाकारी क्षमता उप–महाद्वीप में राजनीतिक संयम को बढ़ावा देगी। पुस्तक द्वारा 1980 के दशक के उत्तरार्द्ध से लेकर वर्तमान समय तक अर्थात् बडे पैमाने पर दक्षिण एशिया में राजनीतिक परिदृश्य पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। यह अवधि दक्षिण एशिया के परमाणु अतीत को वर्तमान और भविष्य में घेरती है। लेखक ने स्पष्ट रूप में इस अवधि का उपयोग भारत–पाकिस्तान परमाणु गतिशीलता में केन्द्रित सम्बन्ध–परक–सिद्धान्त के विश्लेषण करने हेतु किया है।

(Thakur ,2011) प्रस्तुत लेख में लेखक द्वारा नवम्बर 2008 में मुम्बई में हुए आतकवादी हमले का विश्लेषण छः बदलते समीकरणों के माध्यम से किया गया है जो भारत–पाकिस्तान सम्बन्धों पर प्रभाव डालते है। इसके साथ ही भारत व पाकिस्तान के मध्य सैन्य प्रतिक्रिया और निष्क्रियता पूर्व की ओर बढ़ रही है। भारत के पाकिस्तान में स्थिर और मजबूत स्वार्थ नहीं है क्योकि पाकिस्तान सरकार, सेना, आई. एस. आई. और आतंकवादियो के बीच अलगाव पर आधारित है जिसकी बहुलता लुप्त होती जा रही है। इस बिगडती सुरक्षा स्थिति को उलटने के लिए पाकिस्तान की सेना को पूर्ण नागारिक नियंत्रण में लाना होगा। लेखक स्पष्ट करते है की भारत को पाकिस्तान में आतंकवाद के मानव और भौतिक बुनियादी ढ़ांचे को नष्ट करने के लिए सैन्य क्षमता और राजनीतिक इच्छा शक्ति हासिल करनी चाहिए।

(Khan, 2012) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक द्वारा दक्षिण एशिया में परमाणु हथियारों का राजनीतिक अध्ययन किया गया है। लेखक वर्णित करते है,कि भारत तथा पाकिस्तान दो संघर्षरत राज्य है। जिनके परमाणु हथियारों के अधिग्रहरण ने युद्ध को बढ़ावा दिया है। संघर्षों ने राज्य को परमाणु हथियार हासिल करने के लिए प्रेरित किया है। हालांकि लेखक का यह तर्क है कि परमाणु हथियारों के द्वारा राज्य के अधिग्रहण से संकट के साथ–साथ शान्ति की प्रक्रिया को संस्थागत बनाने के लिए युद्धों को मुश्किल

बना दिया जा सकता है। दो दक्षिण एशियाई राज्यों के मध्य संघर्ष परमाणु हथियारो के अधिग्रहरण के साथ ठोस संकल्प में बदल गया है। अतः लेखक स्पष्ट करता है कि परमाणु हथियारों के अधिग्रहरण से तनाव समाप्त नहीं हुआ है और न ही दोनों राष्ट्र परमाणु हथियारों की तीव्रता के संकट से बच सके है।

(Sikri,2014) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने भारत का सबसे जटिल पड़ोसी का दर्जा पाकिस्तान को दिया है। जिसके लिए लेखक ने पाकिस्तान की मानसिकता, बाहरी शक्ति हेतु पाकिस्तान का सामरिक महत्व तथा पाकिस्तान की सैन्य तथा परमुाण क्षमता और इसके साथ ही कश्मीर का विवाद इत्यादि को जिम्मेदार ठहराया है। इन सभी कारणोवश भारत द्वारा अन्य दक्षिण एशियाई देशों की तरह पाकिस्तान से सम्बन्ध स्थापित नहीं किये जा सकते है। लेखक स्पष्ट करते है कि पाकिस्तान की नीति एक दोलक की तरह डोलती रहती है। उदाहरण के लिए– 1947–1948 का युद्ध, जिसके परिणाम स्वरूप कश्मीर मामले को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् को संदर्भित किया गया, 1965 का संघर्ष, जिसके उपरान्त 1966 में एक असहज शान्ति समझौते के लिए ताशकन्द समझौता हुआ, 1971 का युद्ध जिससे 1972 में शिमला समझौता हुआ, इस प्रकार स्पष्ट दृष्टिगत होता है कि भारत द्वारा कभी भी पाकिस्तान के खिलाफ निर्णायक सैन्य जीत की इच्छा नहीं की गयी। भारत ने हमेशा धैर्य से काम लिया है। अंत में लेखक स्पष्ट शब्दों में कहते है। कि भारत–पाकिस्तान के मध्य समस्या का समाधान जब उचित समय होगा तभी सम्भव हो सकेगा जैसा की अन्य विभाजित देशों जैसे जर्मनी और वियतनाम में हुआ है।

(Muni, 2014) प्रस्तुत लेख में लेखक द्वारा पाकिस्तान समर्थित विद्वोह का जम्मू एवं कश्मीर में हुर्रियत नेताओं के नाम पर प्रतिनिधत्व को दर्शाने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत लेख में लेखक द्वारा स्पष्ट किया गया है, कि भारतीय प्रधानमंत्री मोदी जी के शपथ ग्रहण समारोह के समय पाकिस्तानी प्रधानमन्त्री नवाज शरीफ को आमन्त्रित किया गया तथा 25 अगस्त को पाकिस्तान सरकार की विदेश सचिव स्तर की वार्ता जिसमें पाकिस्तान द्वारा कश्मीर सरकार के हुर्रियत नेता शब्बीर शाह से मिलने की चेष्ठा जाहिर की गयी। पाकिस्तान की इस पहल को मोदी सरकार द्वारा रद्द किये जाने के फैसले से पाकिस्तान को गम्भीर आघात पहुचा। सन् 1993 में हुर्रियत कान्फ्रेन्स बनाई गयी थी जिसमें बडी संख्या

में विविधातापूर्ण समूह शामिल थे जो जम्मू और कश्मीर में पाकिस्तान समर्थित विद्रोह का समर्थन कर रहे थे। इस पहल के लिए विचार और समर्थन यू.एस. और पाकिस्तान के संयुक्त प्रयासों के परिणाम स्वरूप आया है, जो कि नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के हिस्से की तरह मुख्यधारा के प्रतिनिधि बलों की लागत पर कश्मीर घाटी में चरमपंथी सीमा पर आवाज और वैधता देने के लिए है। लेखक ने कहा कि मोदी सरकार के पाकिस्तान की इस पहल पर प्रतिबन्ध लगाने के फैसले से भारत के अन्य सभी पडोसियों को भी एक कड़ा संदेश जाता है कि यदि या जब कभी जरूरत होगी, भारत असबद्ध रूप से सख्त हो सकता है।

(Kalyanarman, 2015) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने भारत तथा पाकिस्तान के मध्य हुये 1965 के युद्ध के सम्बन्ध में संघर्ष विराम के निर्णय आदि का विस्तृत वर्णन किया है। लेखक पुस्तक के माध्यम से कहता है कि भारतीय सेना के कर्मचारियों ने सेना के तत्कालीन प्रमुख जनरल चौधरी द्वारा दी गयी सलाह, उनके गलत विश्वास कि–युद्ध के प्रयास को अब बरकरार नहीं रखा जा सकता है क्योंकि भारत के अधिकांश सीमावर्ती क्षेत्रों के ऊपर गोला बारूद का प्रयोग किया गया है इस सलाह के कारण ही युद्ध विराम पर सहमति व्यक्त की गयी थी। लेकिन गोला बारूद के सम्बन्ध में वास्तविकता अलग थीः भारतीय सेना द्वारा केवल 14 प्रतिशत (kalyanaraman,2015:1) सीमावर्ती गोला बारूद का प्रयोग किया गया था इसमें पाकिस्तानी सेना की तुलना में टैंको की संख्या दुगनी थी। इसके विपरीत, पाकिस्तानी सेना के पास टैंको की आपूर्ति की कमी थी और गोला बारूद अत्यधिक संख्या में थे। लेखक द्वारा यह तर्क दिया गया है कि ऐसी परिस्थितियों में यदि भारत द्वारा एक और सप्ताह के लिए युद्ध जारी रखा होता तो पाकिस्तान को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ता परन्तु भारत ने संघर्ष विराम का निर्णय लेकर इस परिस्थिति को उत्पन्न होने से रोक दिया।

(Ali, Mujahid, Rehman,2015) प्रस्तुत लेख में लेखक द्वारा भारत–पाक शान्ति व्यवस्था में व्यापार कें महत्व की पहचान की गयी है। इस लेख में बताया गया है कि व्यापार भारतीय उपमहाद्वीप में शान्ति और स्थिरता को प्राप्त करने और बनाए रखने में सहायक है। आर्थिक निर्भरता के द्वारा शान्ति और आपसी आर्थिक लाभ को बढ़ावा मिलता है। जो राष्ट्रों के मध्य युद्धों को रोकती है। इसके अतिरिक्त

भारत–पाकिस्तान व्यापार सम्बन्धों को देखते हुए, द्विपक्षीय व्यापार के लिए निम्न उपाय जैसेः– वर्तमान व्यापार की मात्रा, भारत–पाक शान्ति वार्ताओं, क्षेत्रीय और सीमा विवादों और शान्ति समझौतों, में इसकी भूमिका का विश्लेषण करने किया गया है। भारत–पाक व्यापार, संघर्ष के समाधान में सहायक एवं मृदुल भूमिका निभा सकता है। वर्तमान समय के नए क्रम में विश्व की प्रणाली में एक ध्रुवीय से बहुध्रूवीय तक का विस्तार हो रहा है। इस हेतु लेखक स्पष्ट करता है, कि भारत–पाकिस्तान के मध्य शान्ति को बढ़ावा देने के लिए दोनो राज्यों के मध्य व्यापार सम्बन्धों में सुधार के विचार को महत्व देना अति आवश्यक है।

(Singh, 2016) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक द्वारा जम्मू और कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग माना है और भारत को पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर पर अपनी चुप्पी तोड़ने की हिदायद दी है। लेखक ने कहा है कि 2016 के सूचना विनिमय बिल पी.ओके.(पाक अधिकृत कश्मीर) पर भारत के मानचित्र निमार्ण से सम्बन्धित पुष्टि का अभिकथन पर्याप्त नहीं है इस हेतु भारत में तथा विश्व के अन्य देशों को इस मुद्दे का अनुभव कराने के लिए एक प्रभावी बदलाव होना आवश्यक है जिसमें ठोस नीतिगत उपायों को शामिल करना होगा। लेखक द्वारा भारत को पी.ओ.के के सम्बन्ध में, निम्न तीन कदम उठाने चाहिए घरेलू स्तर पर पी.ओ.के के सम्बन्ध मे घरेलू अज्ञानता का मुकाबला करने के उपाय करने चाहिए तथा एक व्यापक समझ पैदा करने हेतु पी.ओ.के पर सार्वजनिक प्रवचन पुनः से देना शुरू करना चाहिए। बाहर स्तर पर–भारत को पाकिस्तान और चीन के साथ द्विपक्षीय कार्यसूची पर पी.ओ.के के मुददे को उजागर करना होगा। भारत द्वारा कशमीर पर पाकिस्तान के लगातार अन्तर्राष्ट्रीय प्रचार के लिए पी. ओ.के पर अपने मौजूदा दावों के आस–पास नियोजित करने की आवश्यकता है। सहायक उपाय के रूप में भारत सार्थक शैक्षिक विचार–विमर्श को प्रोत्साहित करके पश्चिमी देशो में स्थित प्रवासी आन्दोलनों या संस्थाओं के साथ सहयोग के विकल्प विकसित करके पी.ओ.के पर ज्ञान क्षेत्र को समृद्ध बनाने का प्रयास करना चाहिए। लेखक स्पष्ट करते है कि भारत की क्षेत्रीय सीमाओं पर पाकिस्तान की प्रतिस्पर्धा जम्मू कश्मीर के लिए एक विकराल व्याकुलता बन गई है।

(chadda, 2018) लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में भारत तथा पाकिस्तान की विदेश नीति के वर्तमान स्वरूप का वर्णन किया है जिसमें वे पाकिस्तान की वर्तमान नीति में सेना के निहित स्वार्थों को देखते हुए

पाकिस्तान की नीति को आतंकवाद प्रायोजित नीति की संज्ञा देते है। इस हेतु लेखक का मानना है कि जब तक पाकिस्तान की कश्मीर नीति के प्रमुख वास्तुकार अर्थात् सेना, भारतीय सेना को नुकसान नही पहुचाती तब तक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की गम्भीरता के जवाब में मामूली समायोजन होगा परन्तु इसके साथ ही छद्म युद्ध (हिंसा) तथा आतंकवाद जारी रहेगा । भारतीय नीति जो अभिजात वर्ग पर निर्भर है उन्हे संदेह है कि पाकिस्तानी सेना भारत विरोधी नीति का केन्द्र बनी हुई है अपितु सच्चाई इससे परे है लेखक स्पष्ट करता है कि जम्मू कश्मीर में आतंकवाद के नियोजन , तैयारी , सुविधा और निष्पादन को सक्रिय समर्थन पाकिस्तान की सेना की भागीदारी द्वारा प्राप्त है। इस परिस्थिति में लेखक तर्क देते है कि आतंकवाद पर अकुश लगाने के लिए भारत द्वारा पाकिस्तानी सेना के खिलाफ अपेक्षित कदम उठाने की आवश्यकता है।

(ganguly , smetana, abdullah & kurmazin,2018) प्रस्तुत लेख में लेखकों द्वारा भारत और पकिस्तान के बीच कश्मीर को आधुनिक इतिहास का अधिक विरोधाभासी संघर्ष कहा है। यह लेख दक्षिण एशिया प्रतिद्वदिता की जांच करता है। इस लेख में लेखको द्वारा एशियाई यूरोप के स्थिर संघर्षो की गतिशीलता की समझ उत्पन्न की गई है इसमे सधर्षो की प्रमुख विशेषताओं को स्थिर सघंर्षो के रूप में पुनः परिभाषित किया गया है और हिंसा के नवीन खतरे के साथ अनसुलझे प्रचलित सघंर्षो की व्यापक श्रेणी की प्रतिद्वद्विता का वर्णन किया गया है। अतः इस प्रकार वे तीन परिवर्तनकारी गतिशीलता की जांच करते हैः शन्तिपूर्ण विगलन (गलना)हिंसक विगलन और संघर्षविच्छेद। इस प्रकार लेखक स्पष्ट करते है,कि संघर्षकी गतिशीलता के अन्तर्गत हो रहे विकास के बावजूद किसी भी प्रकार के सुझाव के माध्यम से संघर्ष के परिवर्तन की निकट भविष्य में सम्भावना नहीं है।

समस्या कथन –

भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध प्रारम्भ से ही तनावपूर्ण रहें है। विभाजन के उपरान्त ही दोनों देशों के मध्य जनसंख्या के स्थानान्तरण, शरणार्थियों का प्रश्न, नहरों के पानी सम्बन्धी विवाद, सीमा विवाद तथा रियासतों के एकीकरण से सम्बन्धित अन्य समस्याऐं उत्पन्न हुई। इनमें से सर्वाधिक विवादित समस्या भारत–पाकिस्तान सम्बन्धों में कश्मीर विवाद को माना जाता है जिसके कारण इन दोनों देशों के मध्य

कई बार युद्ध हुए ,या युद्ध जैसी सम्भावनायें भी उत्पन्न हुयी हैं। विगत 73 वर्षों में भारत–पाकिस्तान के मध्य चार बड़े युद्ध (1948, 1965, 1971, 1999) लड़े जा चुके है। इन पारस्परिक युद्धों के अतिरिक्त छद्म युद्ध और सीमा पार आतंकवाद एक आम घटना हो गयी है। अतः भारत पाकिस्तान सम्बन्ध विश्व राजनीति में एक चिन्तनीय विषय के रूप में सामने आते है। भारत–पाकिस्तान दोनों ही राष्ट्र परमाणु सम्पन्न राष्ट्र है यदि भविष्य में दोनों राष्ट्रों के मध्य युद्ध हुआ तो वे परमाणु हाथियारों का प्रयोग करेगे जिसके परिणाम पूरे विश्व के लिए बेहद घातक सिद्ध हो सकते हैं, तथा दोनों देशों के मध्य की नकारात्मकता दोनों ही देशों के विकास को अवरूद्ध कर रही हैं।

शोध पद्धति :–

शोध विधि :– प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शोध विधि पर आधारित है।

तथ्य संकलन स्त्रोत :– प्रस्तुत शोध द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित है। जिसमें पुस्तको, पत्रिकाओं, सरकारी दस्तावेजों तथा अन्य प्रकाशित और अप्रकाशित दस्तावेजों और इंटरनेट वेबसाइड आदि को तथ्य संकलन हेतु द्वितीयक स्त्रोत के रूप में प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन का महत्व – भारत और पाकिस्तान सम्बन्ध ऐतिहासिक विवादों के कारण सदैव से ही तनावपूर्ण रहे है। जिसके कारण भारत तथा पाकिस्तान के मध्य बहुत कम समय तनाव में कमी (शैथिल्यता) का रहा है। अतः भारत पाक सम्बन्ध विश्व राजनीति में एक चिन्तनीय विषय के रूप में सामने आते हैं, क्योंकि दोनों ही राष्ट्र परमाणु सम्पन्न राष्ट्र है। यदि भविष्य में दोनों राष्ट्रो के मध्य युद्ध हुआ तो वे परमाणु हथियारों का प्रयोग करेगें जिसके परिणाम सम्पूर्ण विश्व के लिए बेहद घातक सिद्ध हो सकते है। अतः वर्तमान समय में भारत–पाकिस्तान के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन विश्व शान्ति व विश्व बन्धुत्व की भावना को स्थापित करने हेतु महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध दोनों देशों के सम्बन्धों के नये आयामों का विश्लेषण करेगा। अनुसंधान के परिणामों का लाभ अनुसंधानकर्ताओं तथा नीति निर्माताओं को प्राप्त हो सकेगा। उपर्युक्त अनुसंधान के द्वारा भारत–पाक के मध्य सम्बन्धों का विश्लेषणात्मक रूप से अध्ययन करने में सहायता प्राप्त हो सकेगी। साथ ही निर्देशनकर्ता तथा परामर्शदाता भी प्रस्तुत शोध

के परिणामों से लाभ प्राप्त कर सकेगें। प्रस्तुत अनुसंधान के द्वारा ''अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध विषय के क्षेत्र के विद्यार्थी भी इसके प्रति ज्ञान अर्जित कर सकेगें।''

उद्देश्य :–

- भारत तथा पाकिस्तान सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले विवादों का अध्ययन करना।
- भारत तथा पाकिस्तान के मध्य कश्मीर विवाद का अध्ययन करना।
- भारत–पाकिस्तान सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
- भारत–पाकिस्तान सम्बन्धों के प्रभावी विकास के मध्य आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

- भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध ऐतिहासिक विवादों के कारण सदैव से ही तनावपूर्ण रहे है।
- भारत–पाकिस्तान सम्बन्धों को कश्मीर विवाद समस्या स्वतन्त्रता से लेकर वर्तमान तक प्रभावित करता है।
- पाकिस्तान के अमेरिका, रूस तथा चीन के साथ सम्बन्ध भारत–पाक सम्बन्धों को प्रभावित करते है।
- आतंकवाद जैसी समस्यायें भारत–पाकिस्तान के प्रभावी विकास के मध्य चुनौती के रूप में परिलक्षित होती है।

प्रस्तवित अध्याय :–

- प्रस्तावना
- भारत–पाकिस्तान सम्बन्धों के मध्य विवाद
- भारत तथा पाकिस्तान के मध्य कश्मीर विवाद का प्रभाव
- भारत पाकिस्तान सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले कारक
- भारत–पाकिस्तान सम्बन्धों के प्रभावी विकास में आने वाली चुनौतियाँ
- निष्कर्ष

सन्दर्भ सूची

- Ahmed, A.(2014):"India's Doctrine Puzzle : Limiting War in South Asia", New Delhi : Routledge. PP. 179-181
- Ahmed,I.(2013):"Pakisatan the Garrison State: Origins,Evolution, Consequesnces 1947-2011", Karanchi : Oxford University, pp.163-168
- Ali, Mujahid and Rehman (2015):"Pakistan-India Relation: Peace Through Bilateral tread",Vol.5, Issue No.2, 2015 ,pp.1-9 avilabel at :https://www.semantic-scholor.org/paper/Pakistan-india-relations/3A-peacethrough-bilateral-Alli-Mujahid/c5fb5abad4614e7090df4ce0968a17ea4bdo2ea : accessed on 14/1/2019
- Bajpai and Mallavarapu (2005):"International Relations in India : Theorising the Region and Nation", New Delhi : Orient Long man private limited, pp. 1-16
- Bandyopadhyaya, J.(2003):"The Making of India's forign Policy", New Delhi : Allied Publication, P. 244
- Banerjee, S. (2013):"Critical Issue in Indian Polices : India's Foreign Policy",New Delhi : Oxford University, PP.486-995
- Bonny, Maini and Malik (2011):"Indian and Pakistani Retired Military Leaders Reflect on Relation Between the Two Countreis, past, present and future, Bern", Switzerland : Peterland, PP.157-159
- Chandha,V. (2018): "Retern The Favour With a Thousend Cuts:India's Pakistan Policy",New Delhi:IDSA,pp.1-10
- Dahiya and Behuria (2012):"Indias Neighbourhood : Challenges In The Next Two Decades", New Delhi : Pentagon, PP. 163-190
- Dubey,M. (2013):"Indias Foreign Policy Coping With the Changing World Updated Edition With New Chapter on Pakistan", New Delhi : Orient Black Swan, PP.161-200

- Dunne, T. (2008):“Liberalism”(edited by, Baylis, Smith and Dwens In Book “The Globalization of World Politics: An Introduction To International Relations”), New York : Oxford University, pp.110-119
- Francis, (1992): “The End Of History And The Last Man”, New York : The free press.
- Ganguli and Kapur (2011):“India, Pakistan And The Bomb:Debating Nuclear Stability in South Asia”,Stratergic Analysis, 9 Aug, 2011 PP. 855-856 available at : https://doi.org//0.1080/09700161,2011,591813 accessed on 03/01/2019
- Ganguli, Samentana, Abdullah and Kurmazin (2018): “India Pakistan And The Kashmir Dispute:Unpaking The Dynamic Of South Asian Frozen Conflict”, Jermany :Asia Europe Journal, pp.1-18
- Kalyanaraman, S. (2015):“The Context Of The Case-Fire Decision In The 1965 India-Pakistan war”,New Delhi : IDSA, PP. 1-10
- Khan , Z. (2005): “India-Pakistan Nuclear-Rivalry : Perceptions, Misperceptions And Mutual Deterence”, Islamabad : Islamabad Policy Research Institute, PP. 1-87
- Khan, I. (2007):“Pakistan Stratergic Culture And Foreign Policy Making”, New York : Nova Science, PP. 1-2
- Khan, S. (2012):“Nuclear Weapons And Conflict Transformation : The case Of India Pakistan”, New York, Routledge, P.216
- Kumar, S. (2014):“Stability And Growth In South Asia”, New Delhi : Pentagon Press, PP. 300-310
- Kumar, U. (2016): “Riverine Neighbourhood : Hydro Politics In South Asia”,New Delhi : Pentagon, PP. 91-100

- LiLi (2009): “Security Perception And China-India Relations”,New Delhi " KW Publishers Pvt. Ltd. PP. 1-9
- Malone, D. M. (2011):“Does The Elephant Dance?”, New York : Oxford University, PP. 47-70
- Mearsheimer, J.J. (2001):“The Tragedy Of Great Power Politics”,New York : Northern & Company, PP.1-4
- Modelski,J. (1962): “Theory Of Foreign Policy” London : Princeton University,PP. 6-7
- Mukherjee and Malone (2018):“Indian Foreign Policy And Contemporary Security Challenges”,Vol. I. 27 August,2018, PP. 87-104 available at : https: www. researchgate.net/publication 1227734908 accessed on 09/03/2019
- Muni, S.D. (2014):“Modi's Neighbourhood Intiative”, Vol.49, issue No-38, 20 Sep,2014P.no-1 available at : https:// www.epw.in//journal12014/38/Commentery/ modis-Neighbourhood - initiative. html accessed on 14/1/19
- Munshi, V. (2013):“Wars by Pakistan”, New Delhi : Knowledge world, PP. 142-152
- Panigrani, D. N. (2010):“Jammu And Kashmir,The Cold War And The West”, Delhi : Routledge PP. 1-22
- Raghavan , P. (2012): “The Finality of Partition : Bilateral Relation Between India Pakistan,1947-1957”, University of Cambridge, PP.28-51
- Rana, K. (2018):“Indian foreign Policy: Changing Requirments And India's Response”, Vol.L 111, No. 31, 4 August, 2018 PP. 1-5 available at : Economic Political weekly 11250.pdf/accessed on 09/03/19
- Salik, N. (2010):“The Genesis Of South Asia Nuclear Deterence : Pakistan's perspective”, New York : Oxford University, PP. 163-165

- Schofield, V. (2003):“Kashmir In Conflict : India Pakistan And The Undering War”,New York : I.B TAVRIS PP. 1-27
- Scott, D. (2011):“Hand book of India's International Relations” (edited by Scott, D. in Book “India's relations with Pakistan”) London And New York : Routledge, PP. 159-169
- Sikri,R. (2014): “Callange And Stratergy Rethinking India’s Foreign Policy”, New Delhi(London) :SAGE , pp.16-38
- Singh and Roy (2011): “Indian Political Thought : Themes And Thinkers”, Delhi : Pearsen,PP.11-15
- Singh, P. (2016):“Beyond Cartographic Assertion : A Road Map On Pakistan Occupied Kahmir”, New Delhi : IDSA, PP.1-10
- Sridharan, E. (2017):“International Relation Theory And The India Pakistan Conflicts” : Vol.49, IssueNo.2, April, 2005PP, 103-124, availableat : https:/www. researchgate.net/ publication/232900803/indiaReview Sridharanarticlereprint.pdf. accessed on 28/02/2019
- Stackpole, H. (2014):“Asia's Bilaetral Relations”, U.S. (edited by Wirsing in Book “India-Pakistan Relations Breaking With The Past?”) Asia-Pasific Center for Studies, PP. 111-118 Sikri,R. (2014): “Callange And Stratergy Rethinking India’s Foreign Policy”, New Delhi(London) :SAGE , pp.16-3
- Stephen, P.C. (2013):“Shooting For Century : Finding Answers To The India Pakistan Coundrm”,New Delhi : Harpercoliins, PP. 167-180
- Task Force Report (2010):“Water Security For India : The External Dynamics”, New Delhi : IDSA , PP. 31-43
- Tharror,S. (1013): “Pax Indica:India And The World Of The 21st Cencuary”, New Delhi: Penguin Books, pp.27-82

- Wariko, K.l (2014):"The Other Kashmir, Society, Culture and Politics In The KaraKoram Himalayas" (edited by Jhon, W. in Book "Pakistan Occupied Kashmir : An Emerging Epicentre Of Globla Jihad") New Delhi : Pentagon Press. PP. 307-322
- Wolpert, S. (2011): "India Pakistan : Continued Conflict or Cooperation?", New Delhi : Routledge, PP.857-860